1st Paper

Dr. Keerti Kumar
Asstt. Prof. (Guest)
Deptt. of Psychology, S.R.A.P. College Barachakia,
(A constituent unit of B.R.A. Bihar University MFP)

Subject Psychology.
Topic Thorndike's theory of learning.
Class B.A. Psychology (H) Part I (1st Paper)
Day. Tuesday
Date. 15/02/2022
Period. 2nd
Contact no. - 9801466117

'प्रयत्न और भूल'

प्रश्न: थार्नडाइक के शिक्षण सिद्धान्त का मूल्यांकन करें।

अथवा

सीखने के प्रयत्न-त्रुटि सिद्धान्त का मूल्यांकन करें।

अथवा

सीखने के प्रयत्न और भूल सिद्धान्त की व्याख्या सोदाहरण करें।

उत्तर:- 'प्रयत्न और भूल' सिद्धान्त के प्रवर्तक प्रो० थार्नडाइक महोदय हैं। इस सिद्धान्त को संबंधवाद सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार पशु अथवा मनुष्य सभी किसी-न-किसी क्रिया को करते-करते ही सीखते हैं। तात्पर्य यह है कि व्यक्ति के सामने जब कोई नया काम करने को आ जाता है तब परिस्थिति के दबाव के कारण वह व्यक्ति उसमें कुछ नियंत्रण लेना चाहता है अथवा अपने क्रियात्मक व्यवहारों को समायोजित करना चाहता है। प्रारंभिक अवस्था में तो कुछ कठिनाइयाँ होती हैं लेकिन आगे चलकर गलतियाँ भी कम होती हैं और सफलता भी मिल जाती है। इस प्रकार वह गलत रास्ते को छोड़कर सही रीति से चलना और सही तरीके से काम करना सीख जाता है। कहने का अर्थ है धीरे-धीरे एक ऐसा समय आता है जब व्यक्ति बिल्कुल दक्षता व निपुणता से अपना काम करना सीख लेता है और उसे समय व श्रम भी कम लगता है।

थार्नडाइक महोदय का एक प्रमाणित प्रयोग चूहे पर भी हुआ। [illegible] चूहों को [illegible] भूलभुलैया

के प्रवेश द्वार पर रख दिया गया। इसमें दो रास्ते बने थे। एक रास्ते से जाने पर भोजन मिलता था, पनीर का टुकड़ा खाने को मिल जाने की व्यवस्था थी और दूसरे रास्ते से निकलने पर बिजली का झटका लग जाता था। देखा गया कि प्रवेश द्वार पर छोड़ते ही चूहा इधर उधर दौड़ने लगता था। वह बार बार लौटकर आता था। गलत रास्ते पर जाने पर बिजली का झटका खाता था। वह बार-बार प्रयास करता था। वह कभी-कभी सही रास्ते पर भी चला जाता था।

अतः बार-बार प्रयास करने पर अंत में वह सही रास्ते पर गया और उसे पनीर का टुकड़ा खाने के लिए मिल गया।

दूसरा प्रमाणिक प्रयोग थार्नडाइक ने बिल्ली पर किया। बिल्ली को उलझन बॉक्स में रखा गया, जिसके बारे में उसे किसी प्रकार का कोई ज्ञान नहीं था। बिल्ली को प्रेरित करने के लिए चौबीस घंटे तक भूखा रखा गया। उलझन बॉक्स का दरवाजा इस प्रकार बना हुआ था कि अन्दर से एक बटन को दबाने से वह खुल जाता था। बॉक्स के बाहर बिल्ली के लिए भोजन मछली रख दी गयी थी। बिल्ली को साधन बनाना यह था कि वह पिंजड़े से निकालकर किवाड़ का खोलना सीख जाये। उलझन बॉक्स में बंद होते ही वह बाहर आने के लिए उछल-कूद करने लगी। वह नाना प्रकार का प्रयास करने लगी। वह कभी बक्से के छेदों से पंजा डालकर बाहर निकलने का प्रयास करने लगी। अपने पंजों से छड़ों को तोड़ने का प्रयास करने लगी। फिर हिलती हुई छड़ को तोड़कर बाहर निकलने का प्रयास करने लगी, अतः इसी तोड़फोड़ के दौरान पंजा बटन पर पड़ गया और उलझन बॉक्स का बटन दब गया, दरवाजा खुल गया और बिल्ली बॉक्स से बाहर आ गई और बाहर रखी हुई मछली खा ली। इस प्रकार इस प्रयोग को बार-बार कई दिन तक किया गया और देखा गया कि धीरे-धीरे गलत प्रयासों की संख्या कम होती गयी और अंततोगत्वा बिल्ली दरवाजा खोलना सीख ली।